मुर्गा बांग क्यों देता है ?

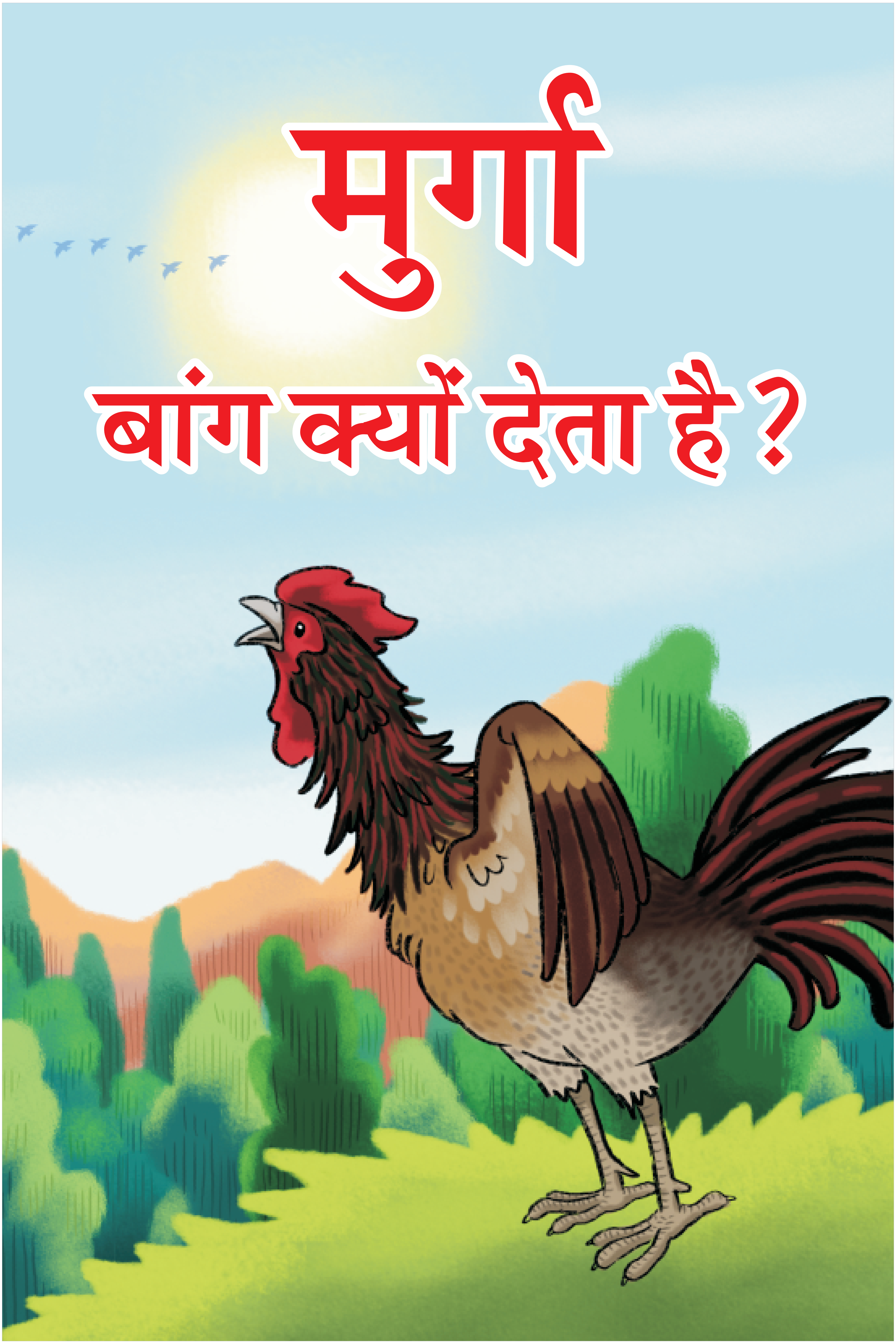

Front Cover Page

Front Cover Inner Side Page

एक दिन सब जानवर सोकर उठे।

उन्होंने देखा कि सूरज उगा ही नहीं।
चारों तरफ अंधेरा ही अंधेरा था।

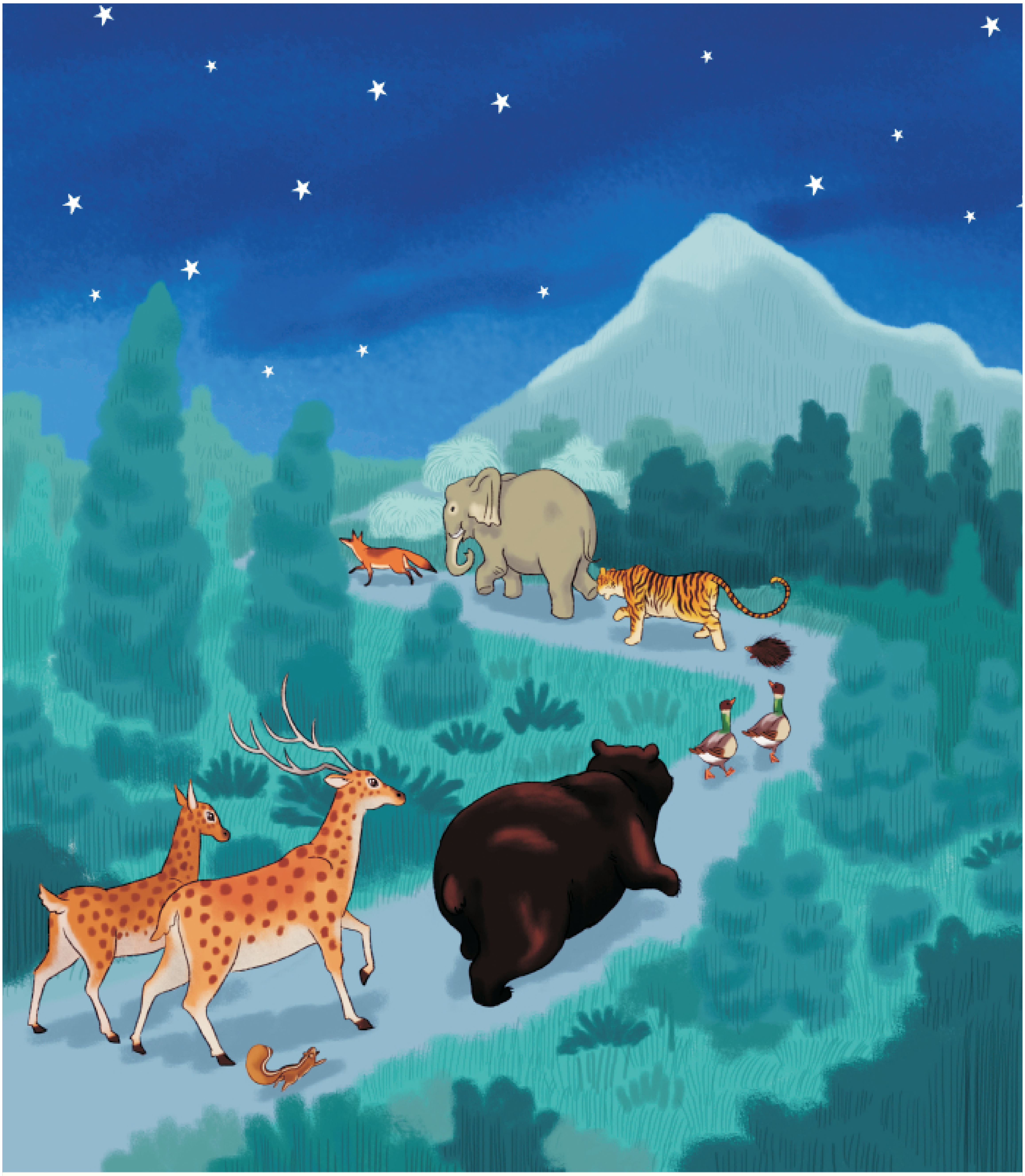

सब जानवर मिलकर
सूरज को मनाने पहुँचे।

हाथी ने कहा– सूरज दादा, बाहर आओ।
पर सूरज बाहर नहीं निकला।

शेर ने कहा- सूरज दादा, बाहर आओ।

पर सूरज बाहर नहीं निकला।

भालू ने कहा- सूरज दादा, बाहर आओ।
पर सूरज बाहर नहीं निकला।

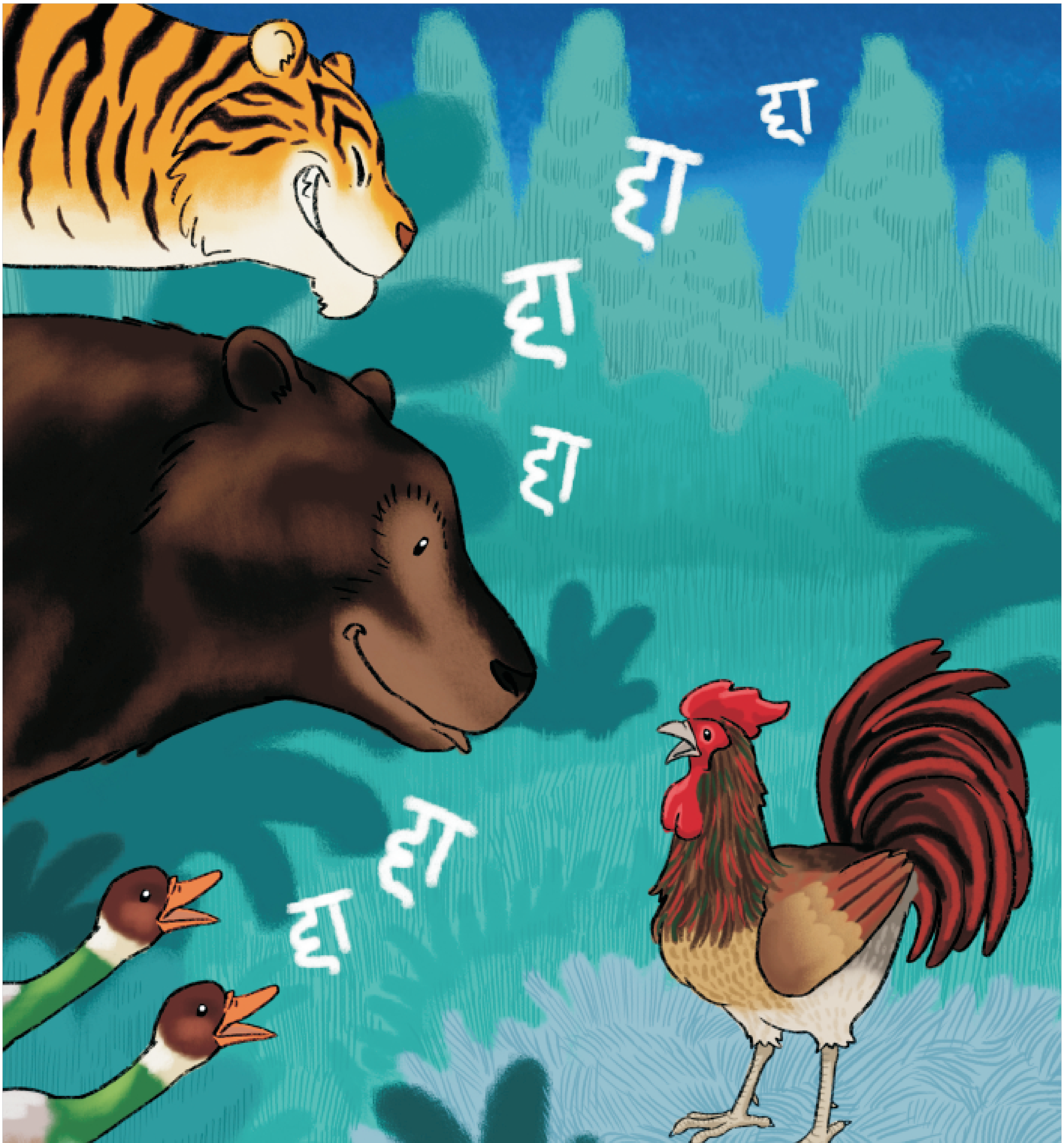

तब एक मुर्गे ने कहा– मैं कोशिश करूँ?
सब उस पर हँसने लगे।

भालू ने कहा– ठीक है,
तू भी कोशिश कर ले।

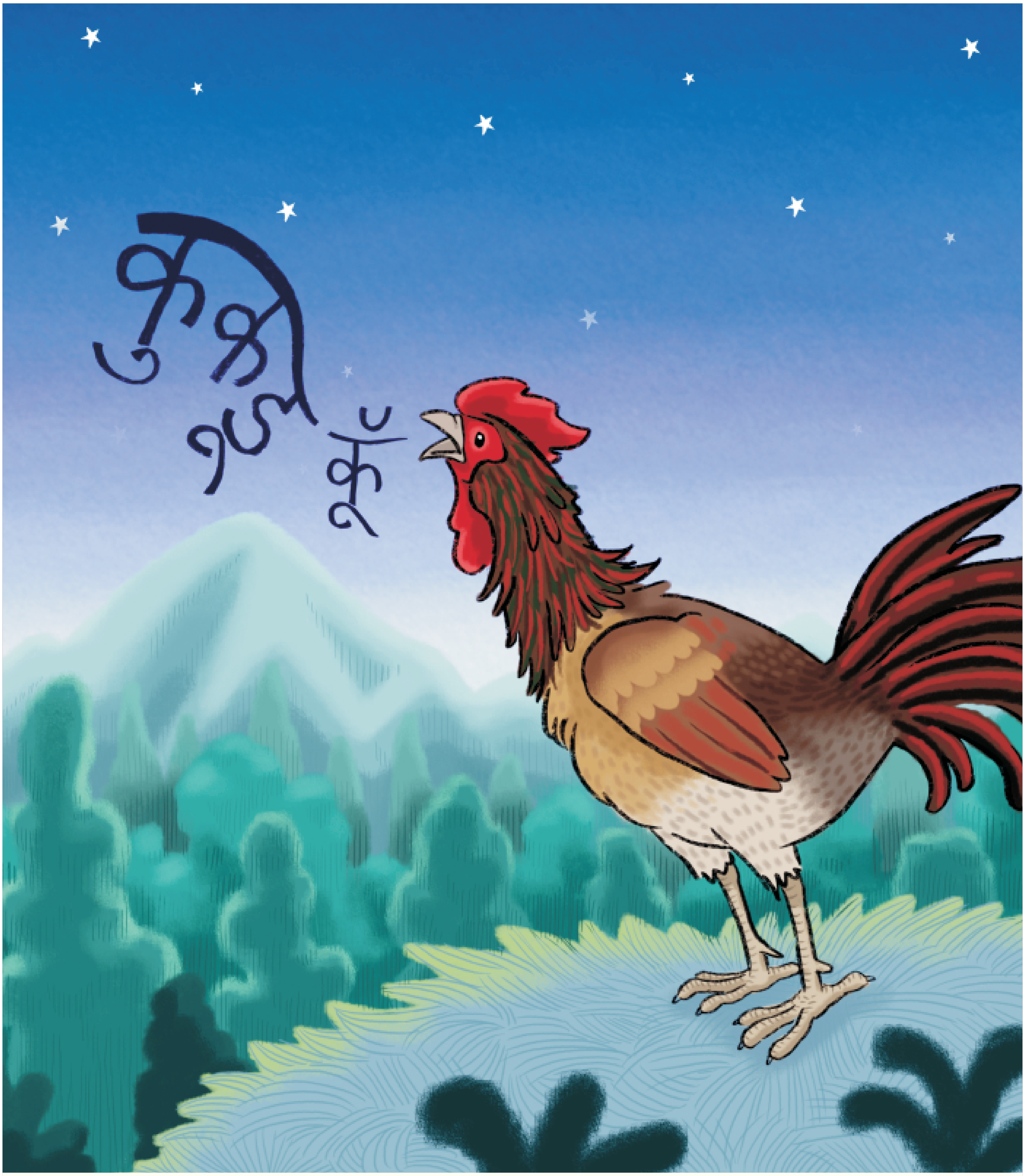

मुर्गे ने कहा– कुकड़ू कूँ।
सूरज थोड़ा सा बाहर निकला।

मुर्गे ने फिर कहा– कुकड़ू कूँ।
सूरज आधा बाहर निकला।

तीसरी बार मुर्गें ने कहा- कुकड़ू कूँ।

अबकी बार सूरज पूरा बाहर निकल गया।

तभी से सूरज मुर्गे के बांग देने पर ही निकलता है।

Back Cover Inner Side Page

मुर्गा बांग क्यों देता है ?

एक दिन सब जानवर सोकर उठे। उन्होंने देखा कि सूरज उगा ही नहीं। चारों तरफ अंधेरा ही अंधेरा था। सब जानवर मिलकर सूरज को मनाने पहुँचे। हाथी ने कहा- सूरज दादा, बाहर आओ। पर सूरज बाहर नहीं निकला। शेर ने कहा- सूरज दादा, बाहर आओ। पर सूरज बाहर नहीं निकला। भालू ने कहा- सूरज दादा, बाहर आओ। पर सूरज बाहर नहीं निकला। तब एक मुर्गे ने कहा- मैं कोशिश करूँ? सब उस पर हँसने लगे। भालू ने कहा- ठीक है, तू भी कोशिश कर ले। मुर्गे ने कहा- कुकड़ू कूँ। सूरज थोड़ा सा बाहर निकला। मुर्गे ने फिर कहा- कुकड़ू कूँ। सूरज आधा बाहर निकला। तीसरी बार मुर्गे ने कहा- कुकड़ू कूँ। अबकी बार सूरज पूरा बाहर निकल गया। तभी से सूरज मुर्गे के बांग देने पर ही निकलता है।

मुख्य शब्द - सूरज, हाथी, शेर, भालू

Language and Learning foundation

शिक्षा का अधिकार
सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

unicef